BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

# जल संचय जनभागीदारी: सामुदायिक सहयोग से जल सुरक्षा

7 सितम्बर 2026

सदियों से, भारतीय समुदायों ने स्थानीय जरूरतों के अनुसार जल अधिग्रहण, संग्रहण करने और साझा करने के तरीके विकसित किए। बावड़ियों, तालाबों, जोहड़ों और पारंपरिक सिंचाई प्रणालियों में एक सरल समझ झलकती है: जल सुरक्षा एक सामुदायिक जिम्मेदारी थी।

बढ़ती आबादी, कृषि के विस्तार और त्वरित शहरीकरण ने जल प्रबंधन को और भी जटिल बना दिया है। नई तकनीक, अवसंरचना और संस्थागत व्यवस्था आवश्यक हो गए हैं। फिर भी, स्थायी जल प्रबंधन के लिए सामुदायिक भागीदारी केंद्र बना हुआ है।

सामूहिक कार्यों की इस परंपरा को **जल संचय जनभागीदारी (जेएसजेबी)** में एक नई अभिव्यक्ति मिली। 6 सितंबर, 2024 को शुरू की गई इस पहल ने सामुदायिक भागीदारी और स्वामित्व को जल संरक्षण के केंद्र में रखा है। यह पहल कम लागत वाले भूजल पुनर्भरण और जल भंडारण संरचनाओं के निर्माण और निष्क्रिय बोरवेल को पुनर्जीवित करने पर केंद्रित है। यह संपूर्ण सरकार और संपूर्ण-समाज दृष्टिकोण के माध्यम से वैज्ञानिक रूप से डिज़ाइन किए गए, स्थानीय रूप से उपयुक्त समाधानों को भी बढ़ावा देती है। जल संचय जनभागीदारी को **3सी - समुदाय, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) और लागत द्वारा** निर्देशित किया जाता है।

इस दृष्टिकोण के आधार पर, **वर्षा जल का संग्रहण करने और भूजल को फिर से भरने के लिए** मई 2025 तक **जल संचय जनभागीदारी 1.0** के अंतर्गत देश में **27 लाख** से अधिक संरचनाओं का निर्माण किया गया। इसके अलावा, **जून 2025** में लॉन्च किए गए **जेएसजेबी 2.0** के अंतर्गत, मई 2026 तक **1.5 करोड़ से अधिक भूजल पुनर्भरण संरचनाओं** का निर्माण किया गया। जून 2026 में, जल संचय जनभागीदारी पहल के दायरे का विस्तार किया गया था। जल संचय जनभागीदारी को जल शक्ति अभियान: कैच द रेन (जेएसए: सीटीआर) अभियान के साथ जल **संचय जनभागीदारी: कैच द रेन (जेएसजेबी: सीटीआर)** के रूप में एकीकृत किया गया था। 3 सितंबर 2026 तक, **1.58 करोड़** से अधिक कृत्रिम भूजल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण किया गया है।

### राष्ट्रीय स्तर पर जल संरक्षण और सहयोग पर विशेष ध्यान

जल शक्ति मंत्रालय का विभागीय शिखर सम्मेलन 1-2 सितंबर, 2026 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। यह सहकारी संघवाद को मजबूत करने और केंद्र-राज्य के बीच घनिष्ठ सहयोग के उद्देश्य से विभागीय शिखर सम्मेलनों की श्रृंखला में पहला था। **जल संचय जनभागीदारी: कैच द रेन** जल जीवन मिशन 2.0 के अंतर्गत जल अवसंरचना ढांचा परियोजनाओं, पेयजल प्रणालियों की स्रोत स्थिरता और ग्रामीण जल आपूर्ति के साथ-साथ कैच द रेन शिखर सम्मेलन के चार प्रमुख विषयगत स्तंभों में से एक था।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जनभागीदारी पर जोर देते हुए, अधिक जन जागरूकता पैदा करने के लिए "जल उत्सव" को बढ़ावा देने का सुझाव दिया। प्रधानमंत्री ने विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में जल प्रबंधन और शासन पर ज्ञान और क्षमता को सुदृढ़ करने का आह्वान किया। उन्होंने व्यावहारिक सीखने और सफल समाधानों की प्रतिकृति की सुविधा के लिए जन प्रतिनिधियों, अधिकारियों और किसानों को शामिल करते हुए संरचित अंतर-राज्यीय अध्ययन यात्राओं का सुझाव दिया। उन्होंने जल क्षेत्र के आंकड़ों को एक साथ लाने, व्यवस्थित रूप से प्रबंधन, विश्लेषण और प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए सुदृढ़ जल डेटा शासन का भी आह्वान किया।

शिखर सम्मेलन में जल संचालन के प्रमुख पहलुओं पर चर्चा हुई, जो जल सुरक्षित भारत और विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में एक कदम है।

देश में, इन सिद्धांतों को स्थानीय कार्रवाई में क्रियान्वित किया जा रहा है, जिसमें समुदायों और संस्थानों ने जल संरक्षण उपायों को देशी परिस्थितियों के अनुकूल बनाया है।

## छत्तीसगढ़: जब किसानों ने जल के लिए बनाई जगह

छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में, किसानों ने जल संरक्षण के लिए अपनी कृषि भूमि का हिस्सा अलग रखा है। **आवा पानी झोकी आंदोलन** के अंतर्गत, किसानों ने स्वेच्छा से **अपनी कृषि भूमि का 5 प्रतिशत पुनर्भरण** तालाबों और सीढ़ीदार गड्ढों के लिए समर्पित किया। मॉडल से पता चलता है कि स्थायी जल प्रबंधन के लिए बड़े पैमाने पर विस्थापन या अधिक पूंजी निवेश की आवश्यकता नहीं होती है। इसके लिए सामूहिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है।

**1,260 से अधिक** किसानों ने इस मॉडल को अपनाया, जबकि जिले भर में **2,000 से अधिक सोख्ता गड्ढे** बनाए गए। कई गांवों में, भूजल स्तर **3 से 4 मीटर** बढ़ गया, जबकि 17 दूरदराज के आदिवासी बस्तियों में झरनों को पुनर्जीवित किया गया। सरकार ने सूक्ष्मजल विभाजक मापन, जल भू विज्ञान संबंधी आकलन और तकनीकी मार्गदर्शन के माध्यम से इस प्रयास का समर्थन किया। किसान स्वामित्व पहल के केंद्र में रहा।

*जिला कोरिया, छत्तीसगढ़*

## आंध्र प्रदेश: गांवों ने अपने जल की जिम्मेदारी ली

आंध्र प्रदेश के प्रकाशम जिले में, **मुरुगुम्मी, मारेला और थंगेला** जैसे गांवों को एक बार अनियमित बारिश, भूजल स्तर में गिरावट और बोरवेल की विफलता का सामना करना पड़ता था। इन चुनौतियों ने कृषि और आजीविका को प्रभावित किया।

जल संचय जनभागीदारी पहल के अंतर्गत, प्रतिक्रिया स्थानीय स्तर पर शुरू हुई। जागरूकता बढ़ाने के लिए ग्राम सभाएं, डोर-टू-डोर अभियान, कलाजाथा (पारंपरिक लोक-रंगमंच प्रदर्शन), और कार्यशालाएं आयोजित की गईं। ये प्रयास **किसानों, महिलाओं, युवाओं और स्थानीय संस्थानों** को जल बजट, फसल योजना और भूजल बंटवारे जैसे उपायों की योजना बनाने के लिए एक साथ लाए।

*जिला प्रकाशम,आंध्र प्रदेश*

**रिज-टू-वैली दृष्टिकोण** अपनाते हुए, गांवों ने वर्षा जल के अधिग्रहण, संग्रहीत करने और पुनर्भरण करने के उपायों को लागू किया। रिज-टू-वैली दृष्टिकोण में वर्षा जल का प्रबंधन शामिल है क्योंकि यह उच्च रिज क्षेत्रों से घाटी की ओर बहता है, मिट्टी और जल संरक्षण को मजबूत करता है।

मुरुगुम्मी में, 71 जल संरक्षण संरचनाओं ने लगभग **8.11 लाख क्यूबिक मीटर** संचयी भंडारण क्षमता प्रदान की। वे 264.5 हेक्टेयर कृषि भूमि में सुरक्षात्मक सिंचाई का समर्थन करते हैं।

मारेला में लगभग **10.04 लाख क्यूबिक मीटर** संचयी भंडारण क्षमता के साथ 53 संरचनाएं थीं। इसके अतिरिक्त, सामुदायिक तालाबों और टैंकों के नवीनीकरण ने लगभग 5.95 लाख क्यूबिक मीटर अतिरिक्त भंडारण क्षमता का योगदान दिया।

थंगेला में लगभग **5.89 लाख क्यूबिक मीटर** संचयी भंडारण क्षमता के साथ 71 संरचनाएं थीं। पारंपरिक जल निकायों के पुनरुद्धार ने भंडारण क्षमता में लगभग 3.98 लाख क्यूबिक मीटर की वृद्धि की।

इन प्रयासों ने लगभग **5,900 लोगों के लिए भूजल उपलब्धता में सुधार किया**, कृषि और डेयरी आजीविका को सुदृढ़ किया, मिट्टी की नमी को बहाल किया और संकट प्रवास को कम करने में मदद की।

*प्रकाशम जिला, आंध्र प्रदेश*

## ओडिशा: छतों और तालाबों से लेकर जलभृतों तक

ओडिशा में, जेएसजेबी पहल **स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी कार्यालयों और अन्य संस्थानों** को एक साथ लाती है। वे वर्षा जल को भूमिगत जलभृतों में इसके पुनर्भरण की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। **छाता योजना के** माध्यम से, छतों से वर्षा जल का संग्रहण किया जाता है, जबकि **एआरयूए योजना** जल निकायों से भूमिगत जलभृतों में पुनर्भरण की सुविधा प्रदान करती है। समाधान भूजल संरक्षण और जल सुरक्षा को मजबूत करने के लिए **सार्वजनिक बुनियादी ढांचे, स्थानीय जल निकायों और सामुदायिक भागीदारी** को जोड़ते हैं।

**जाजपुर जिले में**, एआरयूए योजना के तहत **117 रिचार्ज शाफ्ट** का निर्माण किया गया और 2022-23 और 2025-26 के बीच छाता योजना के तहत **114 रूफटॉप रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम** स्थापित किए गए। सरकारी संस्थानों और शैक्षणिक परिसरों में इन विकासों में कोरेई, बिंझारपुर, बाड़ी, रसूलपुर, दशरथपुर और जाजपुर सहित उच्च प्राथमिकता वाले ब्लॉक शामिल हैं। इस प्रयास ने स्थिर जल आपूर्ति, अधिक कृषि लचीलापन और घरों, विशेष रूप से पानी लाने में महिलाओं को जो समय लगता था, उसमें कमी आई है।

यह दृष्टिकोण जाजपुर से आगे तक फैला हुआ है।

**कटक जिले में,** सरकारी कार्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों और सार्वजनिक सुविधाओं में छाता योजना के तहत **57 रूफटॉप वर्षा जल संचयन प्रणालियां** स्थापित की गईं। गहरे जलभृत पुनर्भरण की सुविधा के लिए तालाबों और जल निकायों में एआरयूए के तहत **35 रिचार्ज शाफ्ट** का निर्माण किया गया। इन

प्रयासों को **स्वयं सहायता समूहों, छात्रों और पंचायती राज संस्थानों** को शामिल करते हुए नुक्कड़ नाटकों, सेमिनारों और कार्यशालाओं द्वारा समर्थित किया गया था।

इसी तरह, **गंजम जिले के दिगापहांडी** में **2020 और 2022 के बीच** भूजल स्तर में **1-3 मीटर** की गिरावट आई है। सरकारी कार्यालयों और स्कूलों में छतों के उपर वर्षा के पानी को एकत्र करने वाली प्रणाली पानी को रिचार्ज बोरवेल में बदल देती है। इस प्रकार के समाधान स्थानों के आसपास किए गए आकलन मानसून के बाद बेहतर सुधार दिखाते हैं।

***दिगपहांडी, गंजम जिला, ओडिशा***

## जल सुरक्षा के लिए बढ़ती गतिविधि

सरकार का दृष्टिकोण केवल जल संरक्षण के लिए संरचनाएं बनाने के बारे में नहीं है। यह पानी के आसपास जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने के बारे में भी है। जेएसजेबी *जनभागीदारी* - लोगों की भागीदारी - को जल प्रबंधन के केंद्र में रखता है। यह स्थानीय रूप से उपयुक्त समाधानों पर समुदायों, पंचायतों, संस्थानों और अन्य हितधारकों को एक साथ लाता है। इसका बड़ा महत्व **पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक योजना के साथ, स्थानीय स्वामित्व को संस्थागत समर्थन के साथ और सामूहिक परिणामों के साथ व्यक्तिगत कार्रवाई को जोड़ने में निहित है**। प्रत्येक संरक्षित बूंद मजबूत समुदायों के निर्माण और भारत की दीर्घकालिक जल सुरक्षा को मजबूत करने के एक बड़े प्रयास का हिस्सा बन जाती है।

## संदर्भ


**प्रधानमंत्री कार्यालय**

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2052494&reg=3&lang=2#:~:text=To%20further%20the%20Prime%20Minister's,whole%2Dof%2Dgovernment%20approach&reg=3&lang=2

https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2306122&reg=48&lang=1

**जल शक्ति मंत्रालय**

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2271660&lang=1&reg=48

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2250425&reg=48&lang=2

https://jsjb.mowr.gov.in/

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2235468&reg=48&lang=2

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2292604&reg=48&lang=1

**पीआईबी बैकग्राउंडर**
https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2286237&reg=22&lang=1

https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?ModuleId=3&NoteId=152136&reg=3&lang=2

**पीआईबी रिसर्च**

**पीके/केसी/जेके/एचएन/ओपी/पीके**